bharatkhand

मार्च 2026 तृतीय अंक

न्यूज़लेटर

भरतखंड किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड कंसोर्टियम

सहयोगी संस्था

Solidaridad

bharatkhand

संपादकीय संदेश

“जब महिला किसान, मज़बूत संस्थाओं के माध्यम से एकजुट होती हैं, तो वे केवल कृषि में भागीदारी नहीं करतीं, बल्कि उसे नए रूप में परिवर्तित करती हैं।”

प्रिय पाठकों

मार्च अंक उन महिलाओं को समर्पित है जो हमारे खेतों, परिवारों और खाद्य प्रणालियों की धुरी हैं। भरतखंड, महिला-नेतृत्व वाले किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को सशक्त बनाने और ऐसे बाज़ार संपर्कों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो महिला किसानों को आधुनिक कृषि मूल्य श्रृंखलाओं में आत्मविश्वास और समानता के साथ भागीदारी करने का अवसर प्रदान करते हैं।

हमारे कार्यक्रम क्षेत्रों में महिलाएँ केवल लाभार्थी नहीं हैं, वे नेतृत्वकर्ता, संवादकर्ता और संस्थान-निर्माता के रूप में उभर रही हैं। जब महिलाएँ मज़बूत सामूहिक मंचों के माध्यम से एकजुट होती हैं, तो उन्हें बाज़ारों, गुणवत्तापूर्ण कृषि आदानों, ज्ञान और वित्तीय सेवाओं तक बेहतर पहुँच मिलती है। यह एकजुटता उनकी क्रय-विक्रय की क्षमता को बढ़ाती है, खरीद-प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाती है और ऐसी आपूर्ति श्रृंखलाओं का निर्माण करती है जो सुदृढ़ और न्यायसंगत दोनों हों।

इस मौसम में महिला-नेतृत्व वाले एफ.पी.ओ के बीच सहयोग पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। साझा ज्ञान, साझा आवाज़ और साझा उद्यम यही वे आधार हैं जिन पर स्थायी कृषि परिवर्तन की नींव रखी जाती है। भरतखंड को गर्व है कि वह इन महिलाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चल रहा है, जो आधुनिक भारत में किसान होने के अर्थ को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं।

हमारे मिशन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष पुनर्योजी कृषि पद्धतियों को अपनाना है। ऐसी पद्धतियाँ जिन्हें महिलाएँ लंबे समय से समझती और अपनाती आई हैं, क्योंकि वे मिट्टी और समुदाय के बीच के गहरे संबंध को भली-भाँति जानती हैं। मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर, आदानों के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित कर और जलवायु-सहिष्णु खेती प्रणालियों को अपनाकर, ये महिलाएँ आने वाली पीढ़ियों के लिए उत्पादकता और पर्यावरण दोनों की संरक्षक बन रही हैं।

आगामी फसल मौसम की तैयारी के साथ, भरतखंड महिला-नेतृत्व वाले किसान संगठनों को मजबूत करने, बाज़ार अवसरों का विस्तार करने और महिला किसानों को वह ज्ञान एवं सेवाएँ उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराता है, जिनकी सहायता से वे सतत् तरीके से खेती करें और अपने स्वाभिमान तथा आत्मनिर्भरता के साथ समृद्धि की ओर आगे बढ़ें।

डॉ सुरेश मोटवानी
महाप्रबंधक, सॉलिडरीडाड

bharatkhand

महिलाएँ और आजीविका

बगीचे से सोलर ड्रायर तक- उद्यमिता की पहल

रक्षिका महिला किसान उत्पादक संगठन (FPO) के प्रोसेसिंग सेंटर में महिला सदस्य सीख रही हैं कि किस प्रकार सूरज की ऊर्जा और अपने कौशल के माध्यम से अधिक उत्पादित टमाटर को पोषण और आजीविका के अवसर में बदला जा सकता है।

हर फसल के मौसम में खेतों में अक्सर इतनी उपज हो जाती है कि बाज़ार उसे समय पर समाहित नहीं कर पाता। टमाटर जल्दी पक जाते हैं, कीमतें गिर जाती हैं, और जो जिस टमाटर से आय अपेक्षित थी वही कई बार खेत में ही नष्ट हो जाते हैं। इसी स्थिति के बीच रक्षिका महिला किसान उत्पादक संगठन के महिला-संचालित प्रोसेसिंग सेंटर में एक छोटा लेकिन प्रभावशाली प्रशिक्षण हुआ जिसने यह दिखाया कि एक सरल तकनीक और महिलाओं का सामूहिक प्रयास कहानी को पूरी तरह बदल सकता है।
भरतखंड द्वारा महिला-नेतृत्व वाले FPOs के साथ निरंतर क्षेत्रीय कार्य के अंतर्गत यहाँ टमाटरों को सोलर ड्रायर में सुखाने पर एक व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। यह सत्र केवल एक व्याख्यान नहीं था, बल्कि एक व्यावहारिक अनुभव था- जहाँ महिलाओं ने मिलकर हर चरण को स्वयं करके सीखा।

सीधे पोषण वाटिका से प्रसंस्करण तक

इस प्रदर्शन में उपयोग किए गए टमाटर किसी बाज़ार से नहीं लाए गए थे, बल्कि पास में स्थित पोषण वाटिका से ही तोड़े गए थे। यह एक ऐसा निर्णय था, जो भरतखंड के उस विश्वास को दर्शाता है कि समाधान समुदाय के भीतर से ही निकलने चाहिए और स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। जब महिलाओं ने अपनी ही मेहनत से उगाए टमाटरों को इस प्रक्रिया में उपयोग होते देखा, तो यह प्रशिक्षण उनके लिए और भी अधिक व्यक्तिगत और अर्थपूर्ण बन गया।

वे चार चरण जिन्हें महिलाओं ने मिलकर सीखा

ताज़े टमाटरों को धोना और साफ करना, ताकि उन्हें प्रसंस्करण के लिए तैयार किया जा सके

टमाटरों को समान आकार के टुकड़ों में काटना, जिससे वे समान रूप से सूख सकें

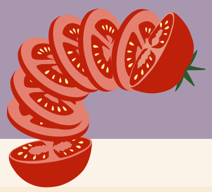

कटे हुए टुकड़ों को सावधानीपूर्वक ड्राइंग ट्रे पर सजाना

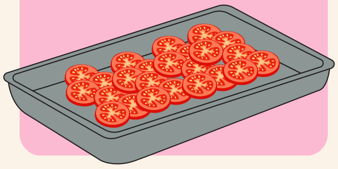

ट्रे को सोलर ड्रायर में रखना और पूरी प्रक्रिया को समझना

छोटी तकनीक, बड़ी संभावनाएँ

इस व्यावहारिक अभ्यास के माध्यम से महिलाओं को स्पष्ट रूप से समझ आया कि सोलर ड्राइंग तकनीक टमाटरों की शेल्फ लाइफ बढ़ा सकती है, अधिक उत्पादन के समय होने वाले फसलोपरांत नुकसान को कम कर सकती है, और मूल्य संवर्धित उत्पादों के निर्माण की दिशा में रास्ता खोल सकती है जैसे सूखे टमाटर, मसाला मिश्रण या संरक्षित सामग्री, जिन्हें स्थानीय बाज़ार से आगे भी बेचा जा सकता है।

bharatkhand

इस प्रशिक्षण की सबसे खास बात इसकी सरलता थी। इसमें किसी महंगे उपकरण या जटिल मशीनरी की आवश्यकता नहीं थी बस सूर्य की रोशनी, ड्राइंग ट्रे और सही जानकारी। जो महिलाएँ वर्षों से घर की रसोई को अपनी सूझ-बूझ से संभालती आई हैं, उनके लिए यह तकनीक सहज और अपनाने योग्य लगी कुछ ऐसा जिसे वे स्वयं आगे बढ़ा सकती हैं।

यह सत्र केवल एक तकनीक सीखने तक सीमित नहीं रहा। इससे प्रोसेसिंग सेंटर में उत्पाद प्रसंस्करण को और मजबूत करने, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अन्य फसलों को संरक्षित करने की संभावनाओं पर विचार करने और आने वाले मौसमों में FPO द्वारा प्रसंस्कृत उत्पादों की एक छोटी श्रृंखला विकसित करने पर भी चर्चा का मार्ग खुला।

इस प्रकार के प्रशिक्षण सत्र भले ही आकार में छोटे हों, लेकिन उनके उद्देश्य गहरे होते हैं। भरतखंड का विश्वास है कि जब जमीनी स्तर पर महिलाओं को व्यावहारिक ज्ञान और सरल उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं, तो वे केवल कौशल ही नहीं सीखतीं, बल्कि आत्मविश्वास भी विकसित करती हैं- और ऐसे समुदायों का निर्माण करती हैं जो अधिक सशक्त, पोषित और आत्मनिर्भर हों।

कचनारिया महिला किसान उत्पादक कंपनी और बकरी पालन आधारित आजीविका

कचनारिया महिला किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड मध्य प्रदेश के जिला आगर-मालवा की ग्रामीण महिला किसानों का एक संगठित समूह है। यह कंपनी 17 अप्रैल 2025 को कंपनी अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत हुई। इसका गठन सॉलिडरीडाड के सहयोग से किया गया, जिसका उद्देश्य महिलाओं को खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से बेहतर आजीविका के अवसर प्रदान करना है।

इस पहल की शुरुआत सुश्री रेखा चौहान और आसपास के गांवों की नौ अन्य महिलाओं ने मिलकर की। इन महिलाओं ने संगठित रूप से अपना स्वयं का उद्यम शुरू करने का संकल्प लिया। उनका उद्देश्य एक ऐसा महिला-नेतृत्व वाला संगठन बनाना था, जहाँ महिलाएँ मिलकर काम करें, आय अर्जित करें और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनें।
आज यह FPC 10 महिला निदेशक मंडल द्वारा संचालित है और इसमें 50 महिला शेयरधारक शामिल हैं। यह संस्था ग्रामीण महिलाओं को एक ऐसा मंच प्रदान करती है जहाँ वे एक साथ आकर नए कौशल सीख सकें और अपने पारंपरिक ज्ञान विशेषकर पशुपालन का उपयोग करके अपने व्यवसाय को विकसित कर सकें।

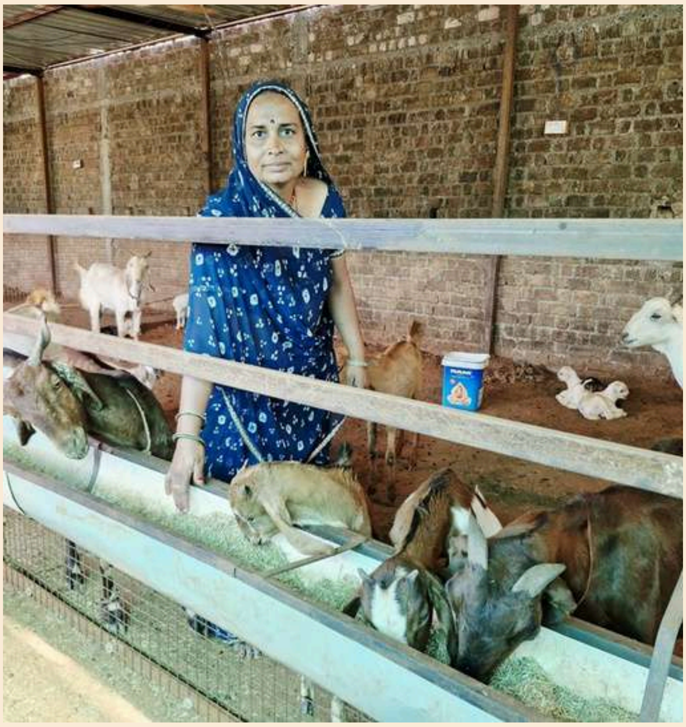

आजीविका गतिविधि के रूप में बकरी पालन

इस FPC की प्रमुख गतिविधियों में से एक बकरी पालन है। इसे इसलिए चुना गया क्योंकि इसे शुरू करना अपेक्षाकृत आसान है, इसमें कम निवेश की आवश्यकता होती है और वर्षभर नियमित आय की संभावना रहती है।

FPO का मुख्य ध्यान

- उत्पादन में सामूहिक भागीदारी
- उत्पादों में मूल्य संवर्धन
- आपूर्ति और बिक्री प्रणाली को मजबूत करना
- बेहतर बाज़ारों से जुड़ाव स्थापित करना

ग्रामीण क्षेत्रों में बकरी पालन महिलाओं के लिए एक उपयुक्त आजीविका गतिविधि है क्योंकि अधिकांश महिलाओं को पहले से ही पशुओं की देखभाल का अनुभव होता है। इसे शुरू करने के लिए अधिक प्रशिक्षण या बड़े निवेश की आवश्यकता नहीं होती और बाज़ार में बकरी के मांस और दूध की अच्छी मांग रहती है।

बकरी पालन के माध्यम से महिलाओं का समूह बकरियों, दूध और जैविक खाद (गोबर) की बिक्री से नियमित आय अर्जित करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

🎯 कचनारिया FPO के उद्देश्य

- महिला किसानों की आय में वृद्धि करना
- पशुधन आधारित सतत आजीविका को बढ़ावा देना
- सामूहिक सौदेबाजी क्षमता और बाज़ार संपर्क को मजबूत करना
- ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करना
- गाँव स्तर पर ही व्यवसाय के अवसर उपलब्ध कराना

प्रमुख गतिविधियाँ और निदेशक मंडल का उन्मुखीकरण

FPO का गठन: महिला किसानों को संगठित कर एक पंजीकृत उत्पादक कंपनी का गठन, जिससे एक आत्मनिर्भर और समुदाय-आधारित मॉडल विकसित हो सके।

क्षमता निर्माण: महिलाओं को FPO की संरचना, कार्यप्रणाली और संस्था के संचालन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करना।

संगठनात्मक विकास और अनुपालन: दस्तावेज़ीकरण, लेखा-प्रबंधन, रिपोर्टिंग प्रणाली और वित्तीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को मजबूत बनाना।

नस्ल चयन: उच्च उत्पादकता के लिए उन्नत नस्लों का परिचय और बेहतर पशुपालन प्रबंधन पद्धतियों का प्रसार।

बुनियादी ढाँचा विकास: बकरी शेड का निर्माण, चारा उत्पादन और पानी की उपलब्धता की व्यवस्था।

पशु चिकित्सा सहायता: पशुओं की नियमित स्वास्थ्य जांच और टीकाकरण की व्यवस्था।

सामूहिक खरीद: चारा, दाना और आवश्यक उपकरणों की सामूहिक खरीद, जिससे लागत कम हो सके।

बाज़ार संपर्क: बकरियों और बकरी से संबंधित उत्पादों की स्थानीय बाज़ारों, व्यापारियों और उपभोक्ताओं को सीधे बिक्री।

bharatkhand

अपेक्षित लाभ

महिला सदस्यों के लिए नियमित आय के अवसर	सामूहिक कार्य के माध्यम से लागत में कम	पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार	महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि	गाँव स्तर पर रोजगार के नए अवसर

प्रमुख चुनौतियाँ

- **प्रारंभिक पूंजी और ऋण तक सीमित पहुँच**
- **निरंतर प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग की आवश्यकता**
- **बाज़ार मूल्य में उतार-चढ़ाव**
- **जलवायु परिस्थितियों का प्रभाव**
- **पशु रोग प्रबंधन और मृत्यु दर को नियंत्रित करना**

FPO की यह संरचना महिलाओं को सामूहिक उत्पादन और सामूहिक बिक्री के माध्यम से बेहतर बाज़ार मूल्य प्राप्त करने में मदद करती है और बिचौलियों पर निर्भरता को कम करती है। साथ ही, इससे महिलाओं को ऋण, कृषि आदान और सरकारी योजनाओं तक बेहतर पहुँच भी मिलती है, जिससे यह व्यवसाय अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनता है।

समग्र रूप से, महिला-नेतृत्व वाले FPO के माध्यम से बकरी पालन आधारित आजीविका महिलाओं की आय बढ़ाने, उद्यमिता कौशल विकसित करने, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है।

bharatkhand

किसान उत्पादक संगठन एवं वैल्यू चेन

बाज़ार से जुड़ते गाँव

भरतखंड किसान उत्पादक संगठन के लिए मात्र एक मंच नहीं है बल्कि वह ग्रामीण उत्पादों के लिए एक सामूहिक पहचान का निर्माण भी कर रहा है। हर छोटा प्रयास गाँव के उत्पादों को बाज़ार तक पहुँचाने का रास्ता बना रहा है।

चाहे वह धूप में सुखाए गए टमाटरों का जार हो, हाथ से कुटे मसालों का एक पैकेट हो, या कोल्ड-प्रेस्ड तेल की एक बोतल इनमें से हर उत्पाद अपने भीतर महीनों की मेहनत, स्थानीय ज्ञान और एक महिला किसान या ग्रामीण उद्यमी की उस आकांक्षा को समेटे होता है, जो मानती है कि उसके उत्पादों को भी एक व्यापक बाज़ार मिलना चाहिए। समस्या कभी भी ग्रामीण उत्पादों की गुणवत्ता नहीं रही, असली चुनौती हमेशा यह रही कि उत्पाद जहाँ बनता है और जहाँ उसे पहुँचना चाहिए, उनके बीच की दूरी कैसे कम की जाए। भरतखंड इसी दूरी को कम करने का काम कर रहा है।

एक सामूहिक विपणन मंच के रूप में कार्य करते हुए भरतखंड ग्रामीण किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) और स्थानीय उद्यमियों द्वारा बनाए गए उत्पादों को ऐसे बाज़ारों से जोड़ता है, जो उनके पैमाने, मूल्यों और आकांक्षाओं के अनुरूप हों। यह मंच किसी बिचौलिये की तरह केवल लाभ लेने वाला नहीं है, बल्कि विश्वास, नेटवर्क और ग्रामीण उत्पादकों की क्षमताओं की गहरी समझ पर आधारित एक सशक्त सेतु है।

सच तो यह है कि गुणवत्ता कभी समस्या नहीं थी। असली अंतर हमेशा उस स्थान के बीच रहा जहाँ उत्पाद तैयार होता है और जहाँ उसे पहचान मिलनी चाहिए।

गुणवत्ता कभी समस्या नहीं रही। असली चुनौती हमेशा उस दूरी की रही, जो उत्पाद बनने की जगह और उसे पहचान मिलने की जगह के बीच थी।

उत्पादकों को खरीदारों से जोड़ना

अपने विभिन्न कार्यक्रम क्षेत्रों में भरतखंड लगातार ऐसे बाज़ार संपर्क विकसित कर रहा है, जो FPOs और ग्रामीण उद्यमियों को खुदरा विक्रेताओं, थोक खरीदारों और संस्थागत खरीदारों से जोड़ते हैं। यह केवल एक बार की खरीद-फरोख्त नहीं होती, बल्कि स्थानीय उत्पादों के लिए निरंतर और भरोसेमंद मांग पैदा करते हैं।

किसी FPO की महिला सदस्य के लिए, जो छोटे स्तर पर अचार, मसाले या सूखे उत्पाद तैयार करती है, एक स्थिर खरीदार मिलना परिवर्तनकारी साबित होता है। इसका अर्थ है कि वह अपने उत्पादन की बेहतर योजना बना सकती है, उसमें निवेश कर सकती है और आत्मविश्वास के साथ अपने उद्यम को आगे बढ़ा सकती है।

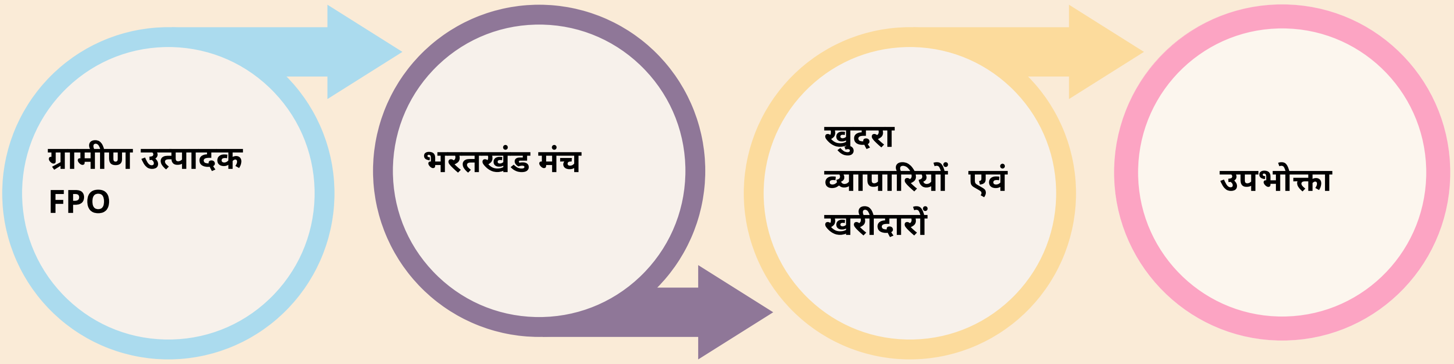

उत्पादों को लोगों तक पहुँचाना

थोक बाज़ार से जुड़ाव के साथ-साथ भरतखंड यह भी समझता है कि ग्रामीण उत्पादों की एक पहचान और कहानी भी होनी चाहिए। छोटे-छोटे प्रदर्शनों, सामुदायिक कार्यक्रमों, स्थानीय मेलों और संस्थागत आयोजनों के माध्यम से उत्पादकों को ऐसा मंच दिया जाता है जहाँ वे अपने उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं के सामने प्रस्तुत कर सकें यह बता सकें कि उत्पाद कैसे बनाया गया, उसमें क्या विशेषता है और स्थानीय स्तर पर तैयार होने का क्या महत्व है।

भरतखंड ग्रामीण उत्पादों को कैसे बढ़ावा देता है

- खरीदारों और संस्थागत ग्राहकों के साथ थोक और खुदरा बाज़ार से जुड़ाव
- छोटे प्रदर्शनी और उत्पाद प्रदर्शन कार्यक्रम, ताकि उपभोक्ता सीधे उत्पाद देख सकें
- सामुदायिक बैठकों और स्थानीय मंचों के माध्यम से प्रचार और विश्वास का निर्माण
- FPO और समुदाय के नेटवर्क के जरिए स्वाभाविक और भरोसेमंद विपणन
- उत्पादकों और खरीदारों के बीच सीधा संवाद, जिससे सुझाव और पसंद को समझा जा सके

प्रामाणिकता ही सबसे बड़ी ताकत

इस पहल का मूल विश्वास यह है कि स्थानीय स्तर पर तैयार किए गए, पारंपरिक तरीके से बनाए गए और छोटे पैमाने के उत्पाद आज के बाज़ार में अपनी अलग पहचान रखते हैं। आज के उपभोक्ता ऐसे खाद्य उत्पादों की तलाश में हैं जिनकी उत्पत्ति सच्ची हो और जिनमें मानवीय मेहनत और ईमानदारी झलकती हो।

भरतखंड का विपणन दृष्टिकोण बड़े विज्ञापनों पर नहीं, बल्कि समुदाय के नेटवर्क, व्यक्तिगत भरोसे और उस उत्पादक की विश्वसनीयता पर आधारित है जो स्वयं अपने उत्पाद के साथ खड़ी होती है।

इस पहल का उद्देश्य केवल एक उत्पाद की बिक्री तक सीमित नहीं है। किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) और ग्रामीण उद्यमियों को मूल्य श्रृंखला का सक्रिय और दृश्यमान हिस्सा बनाकर भरतखंड ग्रामीण उत्पादों के लिए एक सामूहिक पहचान तैयार कर रहा है। यह पहचान उस भूमि, उस परंपरा और उन लोगों से जुड़ी है जिन्होंने पीढ़ियों से इन उत्पादों को उगाया और तैयार किया है।
जैसे-जैसे यह पहचान मजबूत होती है, वैसे-वैसे उन महिलाओं और समुदायों का आत्मविश्वास भी बढ़ता है जो इन उत्पादों को बनाते हैं।

विशेष लेख

भरतखंड किसान-स्वामित्व वाली मूल्य श्रृंखलाओं को कैसे सशक्त बनाता है

छोटे और सीमांत किसानों को अक्सर भरोसेमंद बाज़ार तक पहुँचने, उचित मूल्य प्राप्त करने और संगठित खरीदारों की गुणवत्ता की आवश्यकताओं को पूरा करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भरतखंड इन चुनौतियों का समाधान किसान-स्वामित्व वाली सशक्त मूल्य श्रृंखलाएँ विकसित करके करता है, जहाँ किसान उत्पादक संगठन (FPOs) उत्पाद एकत्रीकरण, गुणवत्ता सुनिश्चित करने और बाज़ार से जुड़ाव में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

इस मॉडल का पहला महत्वपूर्ण चरण है FPO के माध्यम से उत्पादों का एकत्रीकरण। जब कई किसानों की उपज को एक साथ लाया जाता है, तो बाज़ार के लिए पर्याप्त और व्यवस्थित मात्रा तैयार होती है। यह सामूहिक व्यवस्था बिचौलियों पर निर्भरता को कम करती है और किसानों की मोलभाव करने की क्षमता को मजबूत बनाती है।

गुणवत्ता और ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित करना इस प्रक्रिया का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। भरतखंड FPOs को मानकीकृत उत्पादन पद्धतियाँ अपनाने, ग्रेडिंग प्रणाली विकसित करने और रिकॉर्ड रखने की व्यवस्थाएँ स्थापित करने में सहयोग देता है। इससे उत्पाद की गुणवत्ता में निरंतरता बनी रहती है और खरीदारों को यह जानने में आसानी होती है कि उत्पाद किस स्रोत से आया है। इससे आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता और विश्वास दोनों बढ़ते हैं।

भरतखंड मॉडल की एक प्रमुख विशेषता है प्रोसेसरों, एग्री-बिज़नेस कंपनियों और संस्थागत खरीदारों के साथ प्रत्यक्ष बाज़ार संपर्क स्थापित करना। संगठित खरीद प्रणाली को बढ़ावा देकर यह मंच पारदर्शी मूल्य निर्धारण, समय पर भुगतान और दीर्घकालिक साझेदारियों को सुनिश्चित करता है-जिससे किसानों और उद्योग दोनों को लाभ होता है।

इन मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत बनाने में डिजिटल सलाहकारी उपकरणों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। मोबाइल आधारित संदेशों और संचार माध्यमों के जरिए किसानों को समय-समय पर फसल प्रबंधन, मौसम संबंधी सलाह और बाज़ार की जानकारी मिलती रहती है। इससे किसान फसल चक्र के हर चरण में सूचित और बेहतर निर्णय ले पाते हैं।

इसके अतिरिक्त, भरतखंड कृषि बाज़ार के माध्यम से किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि आदान, जैविक इनपुट और वैज्ञानिक सलाह उपलब्ध कराई जाती है। FPO द्वारा संचालित ये केंद्र ज्ञान साझा करने, कृषि आदान वितरण और किसानों के बीच संवाद के महत्वपूर्ण केंद्र बन रहे हैं।

इन सभी प्रयासों के माध्यम से बिखरी हुई कृषि उत्पादन प्रणालियाँ धीरे-धीरे संगठित और बाज़ार-उन्मुख मूल्य श्रृंखलाओं में बदल रही हैं। इससे किसान केवल अधिक उत्पादन ही नहीं कर रहे, बल्कि आधुनिक कृषि बाज़ारों में अधिक प्रभावी और सशक्त भागीदारी भी सुनिश्चित कर पा रहे हैं।

कृषि ज्ञान अनुभाग

रबी फसल की कटाई और अगली फसल की तैयारी के लिए प्रमुख कृषि प्रबंधन उपाय

जैसे-जैसे रबी फसल कटाई के चरण के करीब पहुँचती है, सही फसल प्रबंधन और अगली फसल की समय पर तैयारी अत्यंत आवश्यक हो जाती है। उचित कटाई, फसलोपरांत प्रबंधन और मिट्टी की सही तैयारी न केवल वर्तमान उत्पादन को सुरक्षित रखते हैं, बल्कि किसानों को आगामी फसल मौसम के लिए सतत और किफायती खेती की दिशा में भी तैयार करते हैं।

1. सही समय पर कटाई

फसल की कटाई सही परिपक्वता (मॅच्योरिटी) पर करना आवश्यक है ताकि बेहतर गुणवत्ता और अधिक उत्पादन प्राप्त हो सके। सरसों, गेहूँ और दलहन जैसी फसलों की कटाई तब करनी चाहिए जब दाने पूरी तरह पक जाएँ और उनमें नमी का स्तर उपयुक्त हो। समय पर कटाई करने से गिरने, झड़ने या अचानक मौसम परिवर्तन से होने वाले नुकसान से बचाव होता है।

2. फसलोपरांत प्रबंधन और भंडारण

कटाई के बाद फसल को अच्छी तरह सुखाना, साफ करना और ग्रेडिंग करना बहुत महत्वपूर्ण है। भंडारण से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अनाज में नमी न हो, ताकि खराब होने या कीट लगने की संभावना कम हो। साफ और सुरक्षित भंडारण स्थान तथा उचित पैकिंग सामग्री का उपयोग करने से उत्पाद की गुणवत्ता बनी रहती है और बाज़ार में बेहतर मूल्य मिल सकता है।

3. अगली फसल के लिए बीज चयन

अगले मौसम में अच्छी फसल के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का चयन करना जरूरी है। किसानों को स्वस्थ और रोगमुक्त पौधों से बीज चुनने चाहिए, जिनकी उपज अच्छी हो। प्रमाणित बीज या कृषि विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए बीजों का उपयोग करने से उत्पादन और फसल की सहनशीलता दोनों बढ़ती हैं।

4. मिट्टी के स्वास्थ्य का प्रबंधन

सतत खेती के लिए मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए मिट्टी परीक्षण, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, फसल चक्र (क्रॉप रोटेशन) और जैविक पदार्थों का उपयोग जैसे उपाय अपनाए जा सकते हैं। ये पद्धतियाँ मिट्टी की संरचना को बेहतर बनाती हैं, पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाती हैं और दीर्घकालिक उत्पादन क्षमता को मजबूत करती हैं।

5. जैविक आदानों और प्राकृतिक उपायों का उपयोग

जैव उर्वरक, वर्मी कम्पोस्ट और प्राकृतिक कीट प्रबंधन उपायों का उपयोग खेती की लागत को कम करने के साथ-साथ मिट्टी के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। जैविक आदान मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्मजीवों को बढ़ावा देते हैं और रासायनिक आदानों पर निर्भरता को कम करते हैं, जिससे खेती अधिक सतत और पर्यावरण अनुकूल बनती है।

bharatkhand

सरसों आपूर्ति श्रृंखला का सशक्तिकरण

भारत सरसों सम्मेलन बना एक महत्वपूर्ण मंच

मंदसौर का यह महत्वपूर्ण सम्मेलन खेती से रिफाइनरी तक एक मजबूत और समन्वित सरसों मूल्य श्रृंखला बनाने की दिशा में बड़ा कदम है।

भारत अपनी खाद्य तेल की आवश्यकता का 55 प्रतिशत से अधिक आयात करता है। यह स्थिति देश के लिए आर्थिक रूप से भारी पड़ती है और किसानों को उनकी उपज का पूरा मूल्य नहीं मिल पाता। इसी अंतर को कम करने की दिशा में मध्य प्रदेश के जिला मंदसौर के ग्राम कंघट्टी में आयोजित प्रथम भारत सरसों सम्मेलन एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य सरसों की पूरी मूल्य श्रृंखला को एक मंच पर लाना था। इसमें किसान, कृषि आदान प्रदाता, तकनीकी विशेषज्ञ, शासकीय प्रतिनिधि और बड़े उद्योग खरीदार सभी ने भाग लिया। इस तरह का समन्वय ही टिकाऊ और मजबूत आपूर्ति श्रृंखला की आधारशिला बनता है।

किसान – आपूर्ति श्रृंखला की मजबूत नींव

इस सम्मेलन में 1500 से अधिक सरसों किसानों ने भाग लिया। किसी भी सफल आपूर्ति श्रृंखला की शुरुआत खेत से होती है। इसलिए सम्मेलन में किसानों को ऐसी जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान किया गया जिससे वे निरंतर और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन कर सकें।

विशेषज्ञों ने किसानों को फसल चक्र अपनाने, मिट्टी परीक्षण, फसल अवशेष प्रबंधन और पुनर्योजी कृषि पद्धतियों के बारे में मार्गदर्शन दिया। इन उपायों से न केवल उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ती है बल्कि भूमि की दीर्घकालिक उत्पादकता भी बेहतर होती है। इसके साथ ही बेहतर बीज किस्मों और जैविक आदानों का प्रदर्शन किया गया, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली सरसों उत्पादन के व्यावहारिक विकल्प मिले।

उद्योग की सक्रिय भागीदारी

सम्मेलन की एक विशेष उपलब्धि यह रही कि इसमें AWL, Louis Dreyfus Company और VVF Limited जैसी भारत की प्रमुख खाद्य तेल और तिलहन प्रसंस्करण कंपनियों ने भाग लिया। इन कंपनियों की उपस्थिति केवल औपचारिक नहीं थी। उन्होंने किसानों से सीधे संवाद करते हुए गुणवत्ता मानकों, खरीद प्रक्रिया और मूल्य संवर्धन के अवसरों पर चर्चा की।

इससे यह स्पष्ट संकेत मिला कि उद्योग देश में बढ़ते सरसों उत्पादन को बड़े पैमाने पर खरीदने के लिए तैयार है। जब किसान और खरीदार एक ही मंच पर संवाद करते हैं, तो आपूर्ति श्रृंखला की कई चुनौतियाँ स्वतः कम होने लगती हैं।

टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखला की दिशा में कदम

भारत सरसों सम्मेलन ने यह स्पष्ट किया कि आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाना केवल लॉजिस्टिक्स का विषय नहीं, बल्कि विश्वास और सहयोग का निर्माण भी है। जब उत्पादक, प्रसंस्करण उद्योग, तकनीकी ज्ञान और बाज़ार की मांग एक साथ जुड़ते हैं, तब एक सशक्त और टिकाऊ मूल्य श्रृंखला बनती है।

इस पहल के माध्यम से किसान, उद्योग और संस्थाएँ एक साझा मंच पर आए हैं। यह मॉडल दिखाता है कि किस प्रकार जिला-दर-जिला प्रयासों के माध्यम से भारत की सरसों आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत किया जा सकता है, जिससे किसानों की आय बढ़े और देश की खाद्य तेल में आत्मनिर्भरता की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रगति हो।

Contacts

Bharatkhand Hub Zonal Offices

Bhopal	Bharatkhand Consortium of Farmers Producer Company Limited. D/67, BDA Colony, Kohefiza, Bhopal, Madhya Pradesh - 462001	Mr. Himanshu Bains +91 9009923816 Ms. Anvesha Singh +91 9406779242
Sehore	H.N- 619, Near Nalanda School, Chanakyapuri Sehore Madhya Pradesh 466001	Ms. Namrita Bhanweriya +91 9644195248
Mandsour	HIG-17, Gandhi Nagar, Mandsaur Madhya Pradesh- 458001	Mr. Arvind Patidar +91 7566652686
Dewas	Bharatkhand Hub 48, Ram Nagar, Dewas Madhya Pradesh- 455001	Ms. Purva Wadwekar +91 9171251979
Tarana	H.No. 30 Krishna Kunj Vihar Colony Rupakhedi Road Tarana, Ujjain, Madhya Pradesh- 456665	Mr. Sandeep Mishra +91 9450707018

bharatkhand.net